महर्षि दयानन्द सरस्वती

ओ३म्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16
प्रकाशन की तिथि–2 अगस्त 2014

सृष्टि संवत्- 1, 96, 08, 53, 115
युगाब्द-5115, अंक-86-74, वर्ष-8,
श्रावण कृष्ण पक्ष, अगस्त -2014
शुल्क- 5/ रुपये प्रति, द्विवार्षिक शुल्क-100/ रुपये

प्रेषक : सम्पादक, कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
आर्ष गुरुकुल, टटेसर जौन्ती, दिल्ली-81

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

(राष्ट्रीय आर्यनिर्मात्री सभा का मासिक विचार पत्र)

E-mail : krinvantovishwaryam@gmail.com सम्पर्क सूत्र: 9350945482 Web: www.aryanirmatrisabha.com

संपादक : हनुमत्प्रसाद 'अथर्ववेदाचार्य' सह-संपादक : आचार्य सतीश

प्र वो महे महि नमो भरध्वमाङ्गूष्यं शवसानाय साम । येना नः पूर्वे पितरः प्रदज्ञा अर्चन्तो अङ्गिरसो गा अविन्दन्-ऋ० १।११।६२।२

व्याख्यान–हे मनुष्यों! जो (वः) तुम वा (नः) हम लोगों को (अङ्गिरसः) प्राणादि विद्या और (पदज्ञाः) धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को जानने वाले (महे) बड़े (शवसानाय) ज्ञान बलयुक्त सभाध्यक्ष के लिये (महि) बहुत (साम) दु:ख नाश करनेवाले (आङ्गूष्यम्) विज्ञानयुक्त (नमः) नमस्कार वा अन्न का (अर्चन्तः) सत्कार करते हुए (पूर्वे) पहिले सब विद्याओं को पढ़ते हुए (पितरः) विद्यादि सद्गुणों से रक्षा करने वाले विद्वान् लोग (येन) जिस विज्ञान वा कर्म से (गाः) विद्या प्रकाशयुक्त वाणियों को (अविन्दन्) प्राप्त हों उनका तुम लोग (प्रभरध्वम्) भरण पोषण सदा किया करो।

सम्पादकीय

मजहबी उन्माद की आग

देश में नई सरकार को बने दो मास बीत चुके हैं, सरकार के सकारात्मक और नकारात्मक दोनों तरह के पहलू भी देखने-सुनने को मिल ही रहे हैं, कल तक जो "अब की बार, मोदी सरकार" का नारा लगाते उत्साह से भरे हुए दिखाई देते थे, उनमें से बहुत से लोग निरूत्साहित भी हुए हैं, किन्तु बहुत से ऐसे भी लोग हैं, जो कुछ नवीनता से युक्त कार्यकलापों को देखकर प्रसन्नता का अनुभव कर रहे हैं। पुनरपि सीमाओं पर गोलीबारी जारी है, चीन की ओर से घुसपैठ के दु:खदायी समाचार अब सुनाई पड़ रहे हैं, आतंकी षड्यन्त्रों में कोई रणनीतिक बदलाव हुआ हो, ऐसा कुछ दिखाई नहीं दे रहा है, फिर भी देश में चिन्ता की बड़ी वजह दिखाई नहीं दे रही थी, कि "मजहबी उन्माद की आग" चारों दिशाओं में सुलगने लगी है।

सर्वप्रथम मेरठ में, तदुपरान्त मुरादाबाद के कांठ में, पुनः अमरनाथ के यात्रा मार्ग पर, और उसके बाद उत्तर प्रदेश के सहारनपुर में, प्रश्न उठता है कि-क्या यह मजहबी उन्माद पहली बार सुनने-देखने को मिला है, जो हम इस पर सोच-विचार करें? यह तो पिछले कुछ हजार वर्षों से हमारे देश की ही नहीं अपितु संसार की नियति बन चुकी है। प्रश्न उठता है, क्यों ? क्या मनुष्य शान्ति के अमन-चैन से जीवन नहीं जी सकता? जी तो सकता है, लेकिन कैसे? मनुष्य शान्तिपूर्वक सुख-चैन से तभी जीवन जी सकता है जब मनुष्य धर्म को ठीक-ठीक जान ले, और तदनुसार जीवन यापन करे। और जब हम ऐसा कहते हैं, तब बहुधा हमारे इस मानवी समाज के ही कुछ लोग कहेंगे कि, लिख तो रहे हैं "मजहबी उन्माद" और समाधान बताते हो धर्म, तो मजहब क्या है? और धर्म क्या है? तो निश्चित रूप से स्पष्ट करना पड़ेगा, कि धर्म एक है, और मजहब अनेक हैं, धर्म अपरिवर्तनशील है, जबकि मजबह नितान्त परिवर्तनशील धर्म बुद्धि अर्थात् तर्क पर आरूढ़ होकर मानवीय जीवन को मर्यादाओं में व्यवस्थित करने का उपक्रम है तो मजहब तर्क को तिरोहित करके, बुद्धि को विश्राम देकर अन्धविश्वास पूर्वक चल पडे का नाम है। और इसीलिए मानव समाज में जो संघर्ष होता आज तक हुआ है, वह प्रथम तो धर्म और मजहब के बीच हुआ, और जब धर्म विस्मृत हो गया, तब यह संघर्ष मजहबों के ही बीच बढ़ गया। प्रश्न उठता है क्या धर्म के साथ भी संघर्ष है, तो फिर वह धर्म कैसा? अवश्य इसका उत्तर यह है कि-धर्म का धर्म के साथ कभी संघर्ष नहीं होता, क्यों कि-धर्म एक ही होता है। लेकिन जब भी कोई धर्म को छिन्न-भिन्न करना चाहता है, अर्थात् सत्ययुक्त, विज्ञानसम्मत्, मानवीय मूल्यों, मर्यादाओं को तोड़कर अपनी-अपनी सुविधानुसार

शेष अगले पृष्ठ पर

सम्पादकीय का शेष.....

परिभाषाएं गढ़ता है, तभी मजहब अर्थात् मत-पन्थ प्रारम्भ होता है, यह मत-पन्थ मजहब बनता ही धर्म का उल्लंघन करके है, इसलिए संघर्ष निश्चित है, और होना भी चाहिए, जिससे धर्म बचा रहे, और अधर्म की बढ़ती न हो। किन्तु दुर्भाग्यवश धर्मोद्धारक श्रीकृष्ण की नीतियों को भी शंकालु होकर देखने लगे, सर्वप्रथम धर्म (मर्यादा) किसने तोड़ा, यह भूलकर पहले मार्यादा तोड़ने वाले को, और तदुपरान्त मर्यादा तोड़ चुके व्यक्ति को दण्डित करने के लिए मर्यादा को तोड़नेवाले को जब हम एक ही तराजू में रखकर तौलने लगे, तभी से धर्म लुप्त होता गया, और अधर्म अर्थात् मत-पन्थ-मजहबों की बाढ़ आ गयी। उदाहरणार्थ एक सिरफिरे ने एक मार्ग चलती युवती से छेड़खानी की, भ्रातृत्व धर्म (भाई के कर्त्तव्य) का निर्वहन करते हुए उस युवती के भाई ने उस सिरफिरे की पिटाई कर दी, और पिटे हुए युवक ने पुलिस में शिकायत कर दी, तो पुलिस क्या करती है? झगड़े के मूल कारण में न जाकर प्रथम शिकायती को आधार बनाकर, धर्मरक्षक को पूछती है, जब छेड़ा था, तब शिकायत क्यों नहीं की? और किसी दबाव, आदि के कारण छेड़खानी को सत्य मान भी ले, तो भी धर्मरक्षक भाई से और शिकायती से प्रायः तुल्य व्यवहार ही करती है, परिणाम स्वरूप आज जो भ्रातृत्व धर्म के कारण प्रताड़ित हुआ, वह भविष्य में छेड़खानी करके और शिकायत भी पिटने से पहले ही मार-पिटाई की कर दे तो कोई आश्चर्य नहीं। अर्थात् प्रथम कानून किसने तोड़ा, ये मुख्य नहीं मुख्य यह हो गया कि-प्रथम शिकायत किसने की।

और निश्चित "मजहबी उन्माद" का इतिहास भी यही है? जब तक यह सोच न बनेगी, कि-प्रथम किसने किया? पहली गलती किसकी है? मुसलमान की, या सिख की? सिख की, या ईसाई की? ईसाई की, या हिन्दू की? कारण क्या है? कारण का निवारण कैसे होगा? अर्थात् जब तक दंगों की जड़ खोजकर उस जड़ को समूल नष्ट नहीं करेंगे, तब तक कभी भी संघर्ष न्यून नहीं होंगे, समाप्त होने की तो बात ही बहुत दूर है। और यह निश्चित है कि-जो शासन पद्धति आज तक सरकारों की रही है, और आज भी चल रही है इस पद्धति से कभी समाधान होने वाला नहीं है।

आर्य! आर्याओं! इसका समाधान ऋषि दयानन्द प्रदत्त विचार अर्थात् शिक्षा व्यवस्था और दण्ड व्यवस्था से सम्भव है, और यह व्यवस्था कोई आर्य ही कर सकता है, अन्य किसी के वश की बात नहीं है। अतः सभी बढ़िए और बढ़ाएं। तभी कुछ समाधान होगा।

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की मासिक गतिविधियाँ

बिना सिद्धांतों को समझे, उन्हें धारण किए मनुष्य का निर्माण नहीं होता है। राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा निरन्तर वेद द्वारा प्रतिपादित और ऋषि दयानन्द द्वारा व्याख्यायित सिद्धांतों के माध्यम से निर्माण कार्य में संलग्न है। विगत् माह भी महिला व पुरुषों के लिए निम्न आर्य / आर्या निर्माण सत्र लगाए गए।

आर्य प्रशिक्षण सत्र

	स्थान	दिनांक
1.	आर्य समाज शिवाजी कॉलोनी, रोहतक, हरियाणा	05-06 जुलाई
2.	कम्यूनिटी संटर, शिवालिक नगर, हरिद्वार, उत्तराखण्ड	12-13 जुलाई
3.	ब्राह्मण धर्मशाला, जीन्द, हरियाणा	12-13 जुलाई
4.	आर्य समाज, काठमण्डी, सोनीपत, हरियाणा	12-13 जुलाई
5.	इण्टर कॉलेज, नौनी खेड़ा, मुफ्फरनगर, उ.प्र.	12-13 जुलाई
6.	गोकुलधाम, दशहरा मैदान, आफटा सिहौर, म.प्र.	12-13 जुलाई
7.	गुरुकुल चितौड़ाझाल, मुजफ्फनगर, उ. प्र.	19-20 जुलाई
8.	नवजागरण हाईस्कूल, मिल्क शाहपुर, अमरोहा, उ. प्र.	26-27 जुलाई
9.	कैलाश मठ, विरदु पुर, वराणसी, उ. प्र.	26-27 जुलाई
10.	कैलाश मठ, वाराणसी, में आ. डॉ. विरेन्द्र आर्यव्रत	26-27 जुलाई

पुरोहित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के द्वारा पुरोहित प्रशिक्षण पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। इसके अंतर्गत पिछले मास में 12 व 12 जुलाई को महिला आर्य समाज, डोंगरा मोहल्ला, हिसार में आर्य पुरोहित कक्षा आयोजित हुई। इस पाठ्यक्रम का संचालन आचार्य वर्चस्पति जी के द्वारा किया जा रहा है। भविष्य में भी यह कक्षायें चलती रहेंगी। जो आर्यगण पुरोहित का प्रशिक्षण प्राप्त करना चाहते हैं वे आचार्य वर्चस्पति जी (दूरभाष-9467843826) से सम्पर्क करें।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट पर उपलब्ध

राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा की वेबसाईट www.aryanirmatrisabha.com व www.aryanirmatrisabha.org से भी पत्रिका को प्राप्त किया जा सकता है। पाठकगण पत्रिका को उपरोक्त साईट से डाऊनलोड कर पढ़ सकते हैं व सत्रों की सूचना भी प्राप्त की जा सकती है।

आओ यज्ञ करें!

पूर्णिमा	10 अगस्त	दिन-रविवार	मास-श्रावण	ऋतु-वर्षा	नक्षत्र-श्रवण
अमावस्या	25 अगस्त	दिन-सोमवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-मघा
पूर्णिमा	09 सितम्बर	दिन-मंगलवार	मास-भाद्रपद	ऋतु-शरद	नक्षत्र-पूर्वाभाद्रपदा
अमावस्या	24 सितम्बर	दिन-बुधवार	मास-आश्विन	ऋतु-शरद	नक्षत्र-उत्तराफाल्गुनी

हमारा वैभवशाली विज्ञान

-सोनू आर्य, हरसौला, कैथल, हरियाणा

भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।
शून्य, पाइथागोरस प्रमेय, दशमलव, वर्गमूल।
जोड़, घटा, गुणा, भाग, बीजगणित, घनमूल ।।
द्विपद प्रमेय हमने ही, दी त्रिकोणमिती।
गणित की पहली पुस्तक हमने लिखी लीलावती।।
दिए वैदिक गणित के 17 सूत्र कराया कैलकुलस का ज्ञान।
भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।
अणु-परमाणु आभनिक बन्धों का हमने किया चिन्तन।
यकीन न आए तो खोलकर देख लो वैशेषिक दर्शन।।
सृष्टि उत्पत्ति, प्रलय सिद्धान्त, ग्रहों की गति अवस्था।
सूर्य-चन्द्र ग्रहण की, हमने की वैज्ञानिक चर्चा।
विद्युत सिद्धान्त देने वाले ऋषि अगत्स्य को दो सम्मान।।
भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।
अग्नियान, दूरबीन, आग्नेयास्त्र ब्रह्मास्त्र।
हमने दिया वायुयान पढ़लो विमान शास्त्र।।
आर्यों ने ही की है, प्रकाश चाल की गणना।
सर्वप्रथम सिखाई है मिश्रधातु की रचना।।
खगोलीय पिन्डों का मार्ग दिया खगोल विज्ञान।
भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।
प्लास्टिक सर्जरी, रक्त संचरण विश्व ने हमसे सीखा।
पढ़ना, लिखना, बोलना एवं चेचक का टीका।।
सैन्य व्यवस्था हथियार ज्ञान हमने ही सिखाया था।
सप्ताह के दिन, कैलेण्डर, कागज, बर्फ बनाया था।।
न मानोगे, कम्प्यूटर में भी है आर्यों का योगदान।
भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।
हॉकिन्स से पूर्व हमने की है, परग्रहियों की कल्पना।
हमारी देन है वैज्ञानिक वर्ण व्यवस्था कर्मणा।।
रेशम ज्ञान, ज्योतिष विद्या, अम्ल बारुद रसायन।
हमारे गणितज्ञ आर्यभट्ट, ब्रह्मगुप्त, बोधायन।।
भारद्वाज, चाणक्य, हर्ष थे कितने विद्वान्।
भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।
मालूम है इन बातों को प्रमाण बिना न मानोगे।
किन्तु वेद शास्त्र पढ़कर सूर्य सिद्धान्त से जानोगे।।
सुश्रुत संहिता, चरक संहिता पढ़लो बृहत्त संहिता भी।
आर्यभट्टीय रसरत्नाकर "आर्यों की वैज्ञानिकता" भी।
रॉकेट उड़ाया हमने सोनू आर्य खोजा भगवान।।
भारत के विज्ञान का सुनो जरा गुणगान।
फिर देखो क्या हमसे भी है कोई महान् ।।

।। ऋषि मुनियों ने दिया वरदान ।।

-आचार्य देवेन्द्र दरियापुर कलाँ, दिल्ली

तेरी उपासना का भगवान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
जिसने जानी तेरी माया, जिसने भेद तुम्हारा पाया।
उसने किया है तेरा ध्यान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
जिसने जानी तेरी सूरत, वह ही जाने तेरी कुव्वत्।
तू है निराकार भगवान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
यह संसार है तेरा बनाया, यह तेरे अन्दर है समाया।
करते ऋषि मुनि सब ध्यान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
तू है गुल में तू बुलबुल में, तू हर शाख में तू हर पात में।
तू कण-कण में है भगवान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
सागर तेरी शान बढ़ाये, पर्वत तेरी शोभा गाये।
तेरे कर्म अनुप महान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
कर्मों ने राजा रंक बनाये, भिक्षुक भी राज बिठाए।
तेरी सृष्टि कर्म प्रधान, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
अद्‌भुद है जग की माया, जिसने है सबको भरमाया।
कर कुछ जीवन का कल्याण, ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।
जीवन को श्रेष्ठ बनाओ, नित्य उपासना कर्म अपनाओ।
जो हो जीवन का उद्धार, ऋषि-मुनियों ने दिया वरदान।।
ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।। ऋषि मुनियों ने दिया वरदान।।

सूचना

सभी आर्यगणों से अनुरोध है कि राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा द्वारा भिन्न-भिन्न स्थानों पर आयोजित होने वाले कार्यक्रमों सम्बन्धी सूचना पत्रिका के ई-मेल पते :- krinvantovishwaryam@gmail.com पर भेजे साथ ही सम्बन्धित चित्र (फोटो) भी इसी पते पर भेज देंवे जिससे कि उनको समय पर पत्रिका में प्रकाशित किया जा सके

संध्या काल

श्रावण मास, वर्षा ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(13 जुलाई 2014 से 10 अगस्त 2014)
प्रातः कालः 5 बजकर 00 मिनट से (5.00 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

भाद्रपद मास, शरद ऋतु, कलि-5115, वि. 2071
(11 अगस्त 2014 से 09 सितम्बर 2014)
प्रातः कालः 5 बजकर 30 मिनट से (5.30 A.M.)
सांय कालः 7 बजकर 30 मिनट से (7.30 P.M.)

आर्यावर्त्त से ही कृण्वतो विश्वमार्यम् सम्भव

-आचार्य सतीश

यह ईश्वर का आदेश है, वेद का आदेश है, ऋषि दयानन्द ने इसे ही आर्य समाज का उद्घोष बनाया था। अर्थात् सारे संसार को आर्य बनाओ। संसार भर में आर्य अर्थात् वेद के मानने वाले हों, ईश्वरीय सिद्धान्त ही सबको मान्य हो। सभी आर्य हों, अर्थात् श्रेष्ठ हों, सच्चे आस्तिक हों, धार्मिक हों, सक्षम-सबल व ऐश्वर्यशाली हों, व्यसन मुक्त हों, समाज का हित चाहने वाले हों, प्राणी मात्र के रक्षक हों। ऐसा ही तो आर्य होता है। ऋषि दयानन्द ने **"कृण्वन्तो विश्वमार्यम्"** के लक्ष्य को अपनी पुस्तकों में स्थान-स्थान पर दिया है, उस लक्ष्य को कहीं पर भी छोड़ा नहीं है अपितु बार-बार याद दिलाया है। आर्यों को निर्देश दिया है कि वे निरन्तर अपने इस लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए कार्य करें। अर्थात् आर्य समाज का सर्वोच्च लक्ष्य यही है, सारे संसार को आर्य बनाते हुए बढ़ना।

आइए, अब देखते हैं कि ऋषि दयानन्द ने इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए क्या किया। उनके कार्यों की शैली किस प्रकार रही इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए। क्योंकि बिना कार्य प्रणाली को जाने, बिना कार्य शैली के बृहत् लक्ष्य प्राप्त नहीं किए जाते हैं। बड़े लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए भी यदि उस लक्ष्य को प्राप्त करने के आधार तैयार नहीं किए जाते हैं अर्थात् मार्ग में आने वाले लक्ष्य को प्राप्त करके आधार नहीं बनाया जाता है तो भी बड़े लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है अन्यथा तो भटकाव की स्थिति ही हो जाती है। और शायद यही आर्यसमाज के साथ हो रहा है। अब हम देखते हैं कि **"कृण्वन्तो विश्मार्यम्"** के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए कौन से आधार ऋषि दयानन्द ने तैयार करने का प्रयास किया। यदि हम ऋषि दयानन्द के कार्यो तथा उनकी पुस्तकों के माध्यम से जानने का प्रयास करते हैं तो पाते हैं कि इस बड़े लक्ष्य को आर्य समाज का उद्घोष बनाने के बाद भी उनका अधिकांश कार्य और लेखन इस राष्ट्र को आर्य सिद्धान्तों से परिपूर्ण करने की ओर था। अर्थात् किस प्रकार इस राष्ट्र को वैदिक राष्ट्र बनाया जाए, वेद के सिद्धान्तों पर चलने वाला बनाया जाए, **आर्यावर्त्त** बनाया जाए। उन्होंने अपना जीवन इस राष्ट्र के लोगों को वेद के सिद्धान्त जनाने में लगा दिया, सारा जीवन राष्ट्र को समर्पित कर दिया। अपनी पुस्तकों में स्थान-स्थान पर हर विषय पर चर्चा करते हुए राष्ट्रोत्थान के प्रति अनकी पीड़ा झलक उठती है। इसी कार्य के लिए ही उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया।

लेकिन आर्य समाज का उदघोष तो ऋषि ने **'कृण्वतो विश्वमार्यम्'** दिया था, और यही वेद का आदेश भी है। फिर उन्होंने सारा प्रयास केवल इस राष्ट्र के उत्थान के लिए ही क्यों किया। राष्ट्र को **आर्यावर्त** बनाने के लिए ही वे लगे रहे, अन्य राष्ट्रों के उत्थान के लिए उन्होंने अलग से प्रयास क्यों नहीं किया। संसार-भर में घूम-घूमकर क्यों नहीं आर्य सिद्धान्तों को प्रचारित-प्रसारित किया, केवल इसी राष्ट्र में अपना सारा जीवन लगा दिया। क्या **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** मात्र एक उद्घोष रह गया?

लेकिन ऋषि दूर दृष्टा होते हैं व ऋषि दयानन्द भी दूर दृष्टा थे और जानते थे कि **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** का उदघोष ही आर्य समाज के लिए उपयुक्त है और यही ईश्वरीय आदेश भी है। और उन्होंने स्थान-स्थान पर अपने ग्रन्थों में मानव जाति के कल्याण का मार्ग भी यही बतलाया है और वे सम्पूर्ण मानव जाति का कल्याण चाहते ही थे। ऋषियों का प्रत्येक सिद्धान्त भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए होता है। लेकिन वे ये भी जानते थे कि इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए आधार का होना आवश्यक है। क्योंकि बिना आधार के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता है। और वह आधार है **आर्यावर्त्त**। बिना **आर्यावर्त्त** की स्थापना के **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** की और बढ़ा ही नहीं जा सकता है। इसी के लिए ऋषि दयानन्द प्रयास करते रहे। इस राष्ट्र में वेद के सिद्धान्तों को प्रतिस्थापित करने के लिए उन्होंने अपना जीवन लगा दिया और इसी के लिए बलिदान भी हो गए।

जो सिद्धान्त व विचार धारा कभी संसार भर में प्रचलित थी। संसार के कोने-कोने में लोग इन्हीं सिद्धान्तों को अपनाकर सुख पूर्वक अपने जीवन को चलाते थे। धीरे-धीरे वे सिद्धान्त छूटते गए और संसार-भर में उनको भुला दिया गया। कोई नाम-लेवा भी न बचा। दूसरे देशों की बात तो छोड़ दीजिए अपने राष्ट्र में भी स्थिति यह हो गई कि किसी को उन सिद्धान्तों का पता ही नहीं रहा। आर्य विचार धारा क्या होती है इसका पता ही नहीं रहा। आर्यो का नाम मात्र कुछ विद्वानों के समूह तक रह गया लेकिन वह भी केवल नाम रह गया, आर्य क्या होते है? आर्यों की व्यवस्था क्या थी? आर्य विचारधारा क्या थी? वेद का क्या हमारे लिए उपयोग है? प्राचीन ऋषियों की परम्परा में वेद का अर्थ क्या है? यह सब भूल चुके थे और जो भी इसके विपरीत था वह इनके नाम पर थोड़ा बहुत ही लोगों की जानकारी में था। ऋषि दयानन्द इन्हीं सब विकट परिस्थियों में घोर पुरुषार्थ करके आर्य विचारधारा को सही रुप में हम सबके सामने लाये। यह कोई सामान्य कार्य नहीं था। एक परिवार में एक छोटी सी परम्परा को बदलने के लिए परिवार के लोगों को कितना सघर्ष करना पड़ता है। यहाँ तो पूरे राष्ट्र में उन सिद्धान्तों को मान्यता दिलाना था। हाँ, ऋषि दयानन्द आर्य विचार धारा को मान्यता दिलवा गए। लोगों में उसकी स्वीकार्यता हो गई। देश भर में विद्वानों द्वारा यह स्वीकार्य हो गया था कि ये सिद्धान्त हैं तो सही, चाहे हम इसे स्वीकार करें अथवा न करें। यही स्वीकार्यता है। ऋषि दयानन्द ने शून्य से प्रारम्भ किया था। और उसे ले जाना चाहते थे संसार के प्रत्येक मनुष्य तक। क्योंकि वेद तो मनुष्य मात्र के लिए है और वेद का आदेश है **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** ।

ऋषि दयानन्द के पश्चात भी अनेक लोगों ने इसके लिए प्रयास व पुरुषार्थ किया, अपने आप को आहूत कर दिया। लेकिन हमें यह उदघोष तो याद रहा और वह भी मात्र बोलने के लिये परन्तु उसे प्राप्त कैसे किया जाए, इसके लिए ऋषि दयानन्द ने जो मार्ग हमारे सामने रखा हमने उसको भुला दिया। ऋषि का जो प्रयास इस राष्ट्र को **आर्यावर्त्त** बनाने का था जिसके बाद **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को सार्थक किया जा सकता है उसके लिए प्रयास नहीं किया। आज सैकड़ों वर्षों बाद भी हम **आर्यावर्त्त** की ओर एक कदम भी आगे नहीं बढ़ा पाये, बल्कि कुछ-न-कुछ दूर ही हुए हैं। आज तो स्थिति यह हो गई है कि आर्यसमाज के प्रचारकों को जैसे विदेश में प्रचार करने का रोग लग गया हो। इस प्रकार विदेश भागते हैं जैसे विदेश का ठप्पा लगने के बाद यहाँ प्रचार करने में सुविधा हो जाएगी। हाँ, सुविधा तो हो जाती है लेकिन केवल आर्य समाजों में। आर्य समाज से बाहर तो कोई जानता तक नहीं, पूछता तक नहीं। ये तो मात्र आर्य समाज के नाम पर अपनी इच्छाओं की संतुष्टिमात्र है। अरे! जब तक हम अपने राष्ट्र में आर्य सिद्धान्तों की प्रतिस्थापना से जो समाज में सुख व शान्ति का वातावरण बनता है वह नहीं दिखा पाते हैं। आर्य राष्ट्र किस प्रकार सुख, समृद्धि का वाहक होता है यह संसार को नहीं दिखाते हैं तब तक अन्यों को उसकी ओर आकृष्ट नहीं किया जा सकता। अपने यहाँ तो कोई आर्यो की परम्परा तक जानता नहीं, जहाँ आश्रम, समाज व गुरुकुल आदि बनाकर रहते हैं उसके आस-पास तो लोगों को पता नहीं होता कि आर्य क्या होता है और हम ढिंढ़ोरा पीटने लगते हैं दुनिया भर में। आर्य प्रतिनिधि सभाओं के जिन अधिकारियों को चाहिए कि अपने यहाँ स्थापित समाजों को संगठित व सुदृढ़ किया जाए, उनके माध्यम से प्रचार-प्रसार करके आर्य विचार धारा को आस-पास फैलाया जाए, उस और कोई ध्यान नहीं और महीनों तक विदेश दौरे पर रहते हैं। ऐसे ही लोगों ने आर्य समाज को इतना सिकोड़ दिया कि समान्य जन कहते हैं कि आर्यसमाज भी एक सुधार का आन्दोलन था।

शेष पृष्ठ 6 पर

ऋषि निर्देश...............

क्या बलवान निर्बल को खा जाये

(1)जैसे पशु बलवान् होकर निर्बलों को दु:ख दते हैं, और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हैं, तो वे मनुष्य स्वभावयुक्त नहीं, किन्तु पशुवत हैं। और जो बलवान होकर निर्बलों की रक्षा करता है, वही मनुष्य कहाता है, और जो स्वार्थवश होकर परहानि मात्र करता है, वह जानों पशुओं का भी बड़ा भाई है।

(सत्यार्थप्रकाश भूमिका)

(2) जितने मनुष्य से भिन्न-जातिस्थ प्राणी हैं उनमें दो प्रकार का स्वभाव है, (अर्थात्) बलवान से डरना, निर्बलों को डराना,और पीड़ा कर अर्थात् दूसरे का प्राण तक निकाल के अपना मतलब साध लेना, देखने में आता है। जो मनुष्य (होकर भी) ऐसा ही स्वभाव रखता है उसको भी इन्हीं जातियों में गिनना उचित है। परन्तु जो निर्बलों पर दया, उनका उपकार और निर्बलों को पीड़ा देने वाले अधर्मी बलवानों से किंचितमात्र भी भय, शंका न करके इनको पर पीड़ा से हटाके निर्बलों की रक्षा तन, मन और धन से सदा करना है, वही मनुष्य जाति का निज गुण है। (व्यवहारभानु:)

क्या संसार दु:ख रूप है?

सब संसार में दु:खरूप, दु:ख का घर, दु:ख का साधन रूप भावना करके संसार से छूटना चारवाकों में अधिक मुक्ति मानी जाती है परन्तु जो सब संसार दु:ख रूप होता तो किसी जीव की प्रवृत्ति न होनी चाहिए। संसार में जीवों की प्रवृत्ति प्रत्यक्ष दीखती है, इसलिए सब संसार दु:ख रूप नहीं हो सकता, किन्तु इसमें सुख दु:ख दोनों हैं और जो बौद्ध लोग ऐसा ही सिद्धान्त मानते हैं, तो खान-पानादि करना और पथ्य तथा औषधयादि सेवन करके शरीर रचाया करने में प्रवृत्त होकर सुख क्यों मानते हैं? जो कहो कि हम प्रवृत्त तो होते हैं, परन्तु इसको दु:ख ही मानते हैं, तो यह कथन भी सम्भव नहीं, क्योंकि जीव सुख जानकर प्रवृत्त और दु:ख जानके निवृत्त होता है। संसारमें धर्म क्रिया, विद्या, सत्सगांदि श्रेष्ठ व्यवहार सब सुखकारक हैं, इनको कोई भी विद्वान् दु:ख का लिंग नहीं मान सकता। (स० प्र० स०१२)

जो सृष्टि के सुख दु:ख की तुलना की जाय, तो सुख कई गुणा अधिक होता है और बहुत से पवित्रात्मा जीव मुक्ति के साधन कर मोक्ष के आनन्द को भी प्राप्त होते हैं।(स० प्र० स० ८)

सच्चे तीर्थ कौन से हैं?

वेदादि सत्य-शास्त्रों का पढ़ना पढ़ाना, धार्मिक विद्वानों का संग, परोपकार, धर्मानुष्ठान, योगाभ्यास, निर्वैर, निष्कपट, सत्य-भाषण, माता पिता की सेवा, परमेश्वर की स्तुति, प्रार्थना, उपासना, शांति, जितेन्द्रियता, सुशीलता,धर्म युक्त परुषार्थ, ज्ञान, विज्ञान आदि शुभ गुण कर्म, (यह सब) दु:खों से तारने वाले होने से तीर्थ हैं। (स० प्र० स० ११)

जिससे दु:ख सागर से पार उतरें, कि जो सत्य भाषण, विद्या, सत्संग, यमादि योगाभ्यास, पुरुषार्थ, विद्यादानादि, शुभ कर्म हैं उन्हीं को तीर्थ समझता हूं इतर जल स्थलादि को नहीं। (स्वमन्तव्यामन्तव्य)

वेदादि सत्य शास्त्रों का नाम तीर्थ है कि जिनके पढ़ने, पढ़ाने और उनमें कहे हुए मार्गों में चलने से मनुष्य लोग दु:ख सागर को तरके, सुखों को प्राप्त होते हैं। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका) जितने विद्याभ्यास, सुविचार, ईश्वरोपासना, धर्मानुष्ठान, सत्य का संग, ब्रह्मचर्य, जितेंद्रियतादि उत्तम कर्म हैं, वे सब तीर्थ कहाते हैं, क्योंकि इन करके जीव दु:ख सागर से तर जा सकते हैं। (आर्योद्देश्य रत्नमाला)

क्या होम न करने से पाप भी होता है?

हाँ, क्योंकि जिस मनुष्य के शरीर से जितना दुर्गन्ध उत्पन्न हाके वायु और जल को बिगाड़ कर रोगोत्पत्ति का निमित्त होने से प्राणियों को दु:ख प्राप्त कराता है, उतना ही पाप उस मनुष्य को होता है, इसलिए उस पाप के निवारणार्थ उतना सुगन्ध वा उससे अधिक वायु और जल में फैलाना चाहिए। (स० प्र० स० ३)

जहां जितने मनुष्यादि के समुदाय अधिक होते हैं, वहां उतना ही दुर्गन्ध भी अधिक है। वह ईश्वर की सृष्टि से नहीं, किन्तु मनुष्यादि प्राणियों के निमित्त से ही उत्पन्न होता है, क्योंकि हस्ति आदि के समुदायों को मनुष्य अपने ही सुख के लिए इकट्ठा करते हैं, इसमें उन पशुओं से भी जो अधिक दुर्गन्ध उत्पन्न होता है, सो मनुष्य के ही सुख की इच्छा से होता है।

इससे क्या आया की जब वायु और वृष्टि जल को बिगाड़ने वाला सब दुर्गन्ध मनुष्यों के ही निमित्त से उत्पन्न होता है,तो उसका निवारण करना भी उसको ही योग्य है। (ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका)

यज्ञ में पशुहिंसा

पशु मार के होम करना वेदादि सत्य शास्त्रों में कहीं नहीं लिखा।

सत्यार्थप्रकाश स. 12

यज्ञ में मांस खाने में दोष नहीं, ऐसी पामरपन की बातें वाममार्गियों ने चलाई हैं। (सत्यार्थप्रकाश स. 10)

होम तो देवताओं का हो और मांस पशुओं का तथा मनुष्यों का रक्खें, तो कहो यह व्यवस्था कैसे ठीक-ठीक है? ऐसी व्यवस्था परमेश्वर बनावेगा, यह हमें तो निश्चय नहीं होता, अर्थात् ऐसी व्यवस्था को अन्याय के सिवाय (और) क्या कह सकते हैं? (उपदेश मं. व्या. 6)

ईश्वर सब प्राणियों का पिता है और सब प्राणी उसके पुत्र हैं, ऐसा भाव दिखला कर महर्षि लिखते हैं कि:- भला कोई मनुष्य एक लड़के को मरवावे और दूसरे लड़के को उसका मांस खिलावे, ऐसा कभी हो सकता है।

(सत्यार्थप्रकाश स. 13)

घोड़े, गाय आदि पशु तथा मनुष्य मार के होम करना कहीं नहीं लिखा। केवल वाम मार्गियों के ग्रन्थों में ऐसा अनर्थ लिखा है।

उत्तम क्वालिटी के ओ३म् ध्वज, वैदिक साहित्य व आर्यावर्त्त हवन सामग्री की प्राप्ति हेतु सम्पर्क करें-

आर्य मार्किट, शिवाजी कॉलोनी, रोहतक

-सम्पर्क सूत्र- 9466904890

संस्कारवान् शिक्षा ही सांसारिक सुखों का आधार है

-आचार्य लोकेन्द्रदेव शास्त्री, दिल्ली

सन्तान जितेन्द्रिय, विद्याप्रिय और सत्संग में रूचि करें वैसा प्रयत्न करते रहें। व्यर्थ क्रीड़ा, रोदन, हास्य, लड़ाई, हर्ष, शोक, किसी पदार्थ में लोलुपता, ईर्ष्या, द्वेषादि न करें।......सदा सत्यभाषण शौर्य, धैर्य, प्रसन्नवदन आदि गुणों की प्राप्ति जिस प्रकार हो, करावें। (द्वितीय समुल्लास)

सन्तानों को उत्तम विद्या, शिक्षा, गुण, कर्म्म और स्वभावरूप आभूषणों का धारण कराना, माता-पिता, आचार्य्य और सम्बन्धियों का मुख्य कर्म है। सोने, चांदी, माणिक, मोती, मूँगा आदि रत्नों से युक्त आभूषणों के धारण करने से केवल देहाभिमान, विषयासक्ति और चोर आदि का भय तथा मृत्यु का भी सम्भव है। संसार में देखने में आता है कि आभूषण के योग से बालकादिकों का मृत्यु दुष्टों के हाथ से होता है।

-स्वामी दयानन्द तृतीय समुल्लास (सत्यार्थ- प्रकाश)

महर्षि देव दयानन्द ने सन्तानों को उत्तम विद्या के साथ-साथ गुण, कर्म, और स्वभाव रूप आभूषणों का धारण कराना मुख्य कर्म बताया, परन्तु आज के वातावरण में देखने में आता है कि संसारिक ऐश्वर्यों को प्राप्त कर माता-पिता सन्तानों को संसारिक सुख देकर अपने कर्त्तव्यों की इति श्री मान लेते हैं। मनुष्य का मुख्य लक्ष्य केवल भौतिकवाद (भोगवाद) के साधनों का जुटाना व उनके अपनाने से ही संसारिक उन्नति मान बैठना दु:ख का कारण है। विद्या वह धन है जो गुण, कर्म, स्वभाव का परिवर्तन करके संसारिक उन्नति के साथ-साथ संसार को ठीक-ठीक जानकर परम सुख की प्राप्ति कराती है। वह संसार के भोगों में लिप्त नहीं कराती अपितु वास्तिकता से परिचय कराती है। हम आज भोगवाद संस्कृति की शरण में आकर केवल भोग्य के साधनों को जुटा कर, रोग, शोक, भय आदि उन्मादों को धारण कर अपने ही जीवन को नरक बना लेते हैं। व अपनी सन्तान को भी उसी नरक में धकेल देते हैं। क्योंकि हमारा लक्ष्य केवल संसारिक ऐश्वर्यों को प्राप्त करना मात्र है। हम इस से आगे कभी विचार भी नहीं करते हैं।

विद्या वह आभूषण है जिसे धारण करके मनुष्य सच्चा धार्मिक, संस्कारवान, चरित्रवान, माता-पिता भक्त व सच्चा देश भक्त बनता है आज का पढ़ा लिखा नौजवान जिसे न अपने देश पर स्वाभिमान है न अपने संस्कारों पर गर्व है फिर वह माता-पिता भक्त कैसे हो सकता है। क्योंकि जिस विद्या से वह मनुष्य बन सकता था वह विद्या अब कहां दी जाती है केवल अर्थकारी विद्या पढ़ाई जाती है। महर्षि दयानन्द की धारणा यही थी कि मेरे देश का हर युवक व युवती देश भक्त हो। आचार-विचार व्यवहार से युक्त, सभ्य नागरिक बन देश, समाज व राष्ट्र का नाम रोशन करे। आज का युवा वर्ग भटक हुआ है। उसे मार्ग दिखाने वाला कोई नहीं दिखता। महान ऋषियों और आचार्यो के त्याग में वह रास्ता दिखाई देता है। जिसको हमारा सरकारी तन्त्र, राजनीति व नौकरशाही मैकाले पद्धति से पढ़ा वर्ग मानने को तैयार नहीं है। आज वही शिक्षा पद्धति है जो अंग्रेजी शासन में हमें दी जाती थी। स्वतंत्र भारत में डा० राधाकृष्ण जी के नेतृत्व में जो शिक्षा आयोग गठित किया गया था, उन्होंने भी अपनी रिपोर्ट में यह सुनिश्चित करने का प्रयास किया था। कि भारतीय परिवेश में भारतीय संस्कृति व बच्चों को योग्य बनाने हेतु धार्मिक मूल्यों की शिक्षा जरूरी है जिससे सन्तानों के आचार-विचार व व्यवहार में परिवर्तन आ सके और वे सभ्य नागरिक बन सकें।

परन्तु यहाँ पर धर्म की शिक्षा देना निषेध माना जाता है। धर्म को केवल मतमतान्तरों का रूप मान विभिन्न प्रकार के ढोंगों को बढ़ाने के पहले अवसर प्रदान किये जाते हैं। वह समाज में इतने व्यापक हो जाते हैं कि समाज उनको ही धर्म मानने लगता है। धर्म के नाम पर पाखण्ड़ अन्धविश्वास व भोले लोगों को भड़काया जाता है। मजहब के नाम पर झगड़े होते हैं। अनेकों लोगों का भटकाव मत-मतान्तरों के साथ जुड़कर वे सभ्य समाज से कट जाते हैं, फिर देश में आतंकवाद, नक्सलवाद जेहाद आदि उन्माद फैलाये जाते हैं। देश का सारा समय, धन, सैन्य शक्ति का अपव्यय होता है, जिससे समाज का विकास होना चाहिए। वह शक्ति अपवादों को मिटानें में व्यय होती है। राजनैतिक पार्टियां अपने-अपने स्वार्थों के कारण समाज को जोड़ने का काम न करके समाज को तोड़ने का काम करती हैं। अत: हम यह निर्णय नहीं कर पाते कि एक सभ्य समाज व श्रेष्ठ राष्ट्र का निर्माण किस प्रकार कर सकते हैं। अगर सभ्य समाज व सभ्य राष्ट्र के नागरिकों के निर्माण हेतु प्रयास करना है तो विद्या के क्षेत्र या शिक्षा पद्धति के अन्दर आचार, विचार, व्यवहार, अनाचार-क्या-क्या गलत है यह शिक्षा हमें बालकों को बाल्य अवस्था में ही देनी पड़ेगी। जिस प्रकार एक वृक्ष जब पौधे के रूप में होता है, उसकी हम जितनी अधिक देखभाल करते हैं वह वृक्ष सीधा और एक दिशा में ठीक-ठीक उन्नति करता है। उसी प्रकार बाल्यकाल के श्रेष्ठ संस्कार बच्चों को अर्थात् सन्तान को योग्य बनाते हैं। बाल्य अवस्था ही बच्चों के अन्दर निर्माण की अवस्था है। संस्कार, शिक्षा, आचार-विचार इसी आयु में योग्यता की नींव है। अत: आज समाज को जगाना होगा, आज नहीं जागे तो सब कुछ लुट जायेगा।

अत: विद्या वह आभूषण है जिससे सभ्य नागरिकों का निर्माण हो सकता है। आज संस्कारवान विद्या का अभाव ही पतन का कारण है। जिसके कारण चारों ओर भ्रष्टाचार, दुराचार व अनाचार का बोल-बाला है। अत: सभ्य समाज के निर्माण के लिये वह विद्या देनी होगी जिससे सभ्य समाज का निर्माण हो सकेगा।।

पृष्ठ 4 का शेष

अरे! जब तक हम इस राष्ट्र को **आर्यावर्त्त** नहीं बना लेते हैं, संसार को यह नहीं दिखाते हैं कि आर्य व्यवस्थाओं में कितनी सुख व समृद्धि है, तब तक **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को प्राप्त करने की ओर बढ़ा ही नहीं जा सकता है। यहि ऋषि दयानन्द ने किया था, यही उनकी प्रक्रिया थी कि पहले इस राष्ट्र को **आर्यावर्त्त** बनाया जाए तभी संसार के अन्य लोग आर्य सिद्धान्तों, वेद के सिद्धान्तों को समझने को तैयार होंगे। और यह राष्ट्र **आर्यावर्त्त** तभी होगा जब यहाँ अधिकांश लोग आर्य होंगे। अत: यदि **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** के उदघोस की और बढ़ता चाहते हैं ऋषि दयानन्द की कार्यशैली को अपनी कार्यशैली बनाना चहते हैं, संसार भर में सुख व शान्ति चाहते हैं तो हमारा प्रत्येक कार्य इस राष्ट्र को **आर्यावर्त्त** बनाने की ओर होना चाहिए, अर्थात् लोगों को आर्य बनाने के लिए होना चाहिए, आर्य समाज के समस्त साधनों का प्रयोग भी मात्र इसी के लिए होना चाहिए न कि विदेश भ्रमण और आश्रमों की स्थापना मात्र के लिए। आर्य बनाने का यही कार्य राष्ट्रीय आर्य निमात्री सभा प्रमुखता से कर रही है। अत: आर्य निर्मात्री सभा का सहयोग ही आर्यो का प्रमुख कर्त्तव्य है और यही **आर्यावर्त्त** के माध्यम से **'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्'** को सार्थक करने का माध्यम है।

और **आर्यावर्त्त** का अर्थ है ऐसा राष्ट्र जहाँ की व्यवस्थाएँ वेद के सिद्धान्तों पर आधारित हों। वेद के सिद्धान्तों पर आधारित व्यवस्थाएँ केवल आर्य शासन के द्वारा ही सम्भव हैं। अत: हम सभी का कर्त्तव्य है कि हमें इस दिशा में आगे बढ़ना ही चाहिए। यदि हम **कृण्वन्तो विश्वमार्यम्** के उद्घोष को सार्थक करना चाहते हैं तो उसके लिये **आर्यावर्त्त** का आधार होना चाहिए। यही मार्ग ऋषि दयानन्द ने अपनाया था और यही हम सब का भी कर्त्तव्य है।

द्विदिवसीय आर्य/आर्या प्रशिक्षण के बाद सत्रार्थियों के अनुभव

आर्य व आर्यावर्त के पूर्ण अर्थ का पता चला, आर्य धर्म का ज्ञान मिला, वेदों का संक्षेप में ज्ञान मिला, आर्य धर्म पालन कैसे करना है, इसका पूर्ण ज्ञान प्राप्त किया। आज तक मुझे जीवन का पूर्ण ज्ञान नहीं था। लेकिन इस सत्र में बैठने से जीवन जीने का पूर्ण व उचित ज्ञान मिला।

भविष्य में आर्य धर्म का पालन करना तथा ज्यादा से ज्यादा लोगों को आर्य धर्म के बारे में बताना तथा इससे जोड़ने की पूरी कोशिश करना।

डॉ. सुखबीर सिंह माहला, आयु-54 वर्ष, योग्यता- एम.बी.बी.एस.,एम.डी.
कार्य- चिकित्सा, निवास-सिविल हॉस्पिटल, सोनीपत, हरियाणा

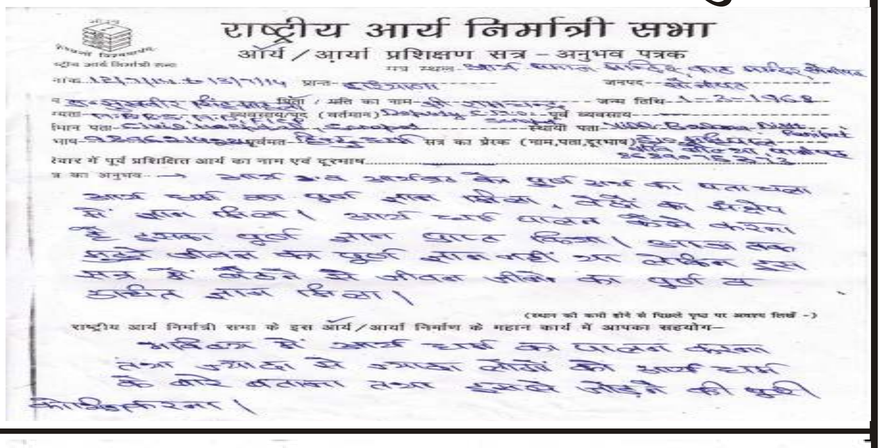
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

इस सत्र में मैंने सुव्यवस्थित जीवन जीने के बारे में जाना, मैं इस सत्र के दौरान आर्यो के जीवन सिद्धांत से परिचित और प्रभावित हुआ। मैंने अपने अस्तित्व को जाना। मैंने यह भी जाना की वेदों का मेरे जीवन में क्या महत्व है। इस दौरान मैं समाज में प्रचलित विभिन्न अंधविश्वासों और कुप्रथाओं से परिचित हुआ और मैं अपने जीवन में एक नई और अलग शुरूआत के लिए तैयार हुआ हूँ। इस सत्र में मैं अपने जीवन के मूल्यों और कर्तव्यों के बारे में जागरूक हुआ हूँ।

इस सत्र ने मुझे जीवन का एक और अलग लक्ष्य दिया है और मैं इस जय आर्य, जय आर्यावृत्त के लक्ष्य की पूर्ति में अपना सहयोग देने और अपने राष्ट्र के युवाओं को योग्य और मजबूत बनाने के लिए अवश्य कार्य करूँगा और अवसर मिलने पर योग्य युवाओं को जो इस लक्ष्य की पूर्ति मे सहयोग कर सकें उन्हें आगे लाऊँगा और उनका साथ दूँगा।

गौरव राणा, आयु-17 वर्ष, योग्यता-12वीं
निवास-गांव सोहटी, सोनीपत, हरियाणा

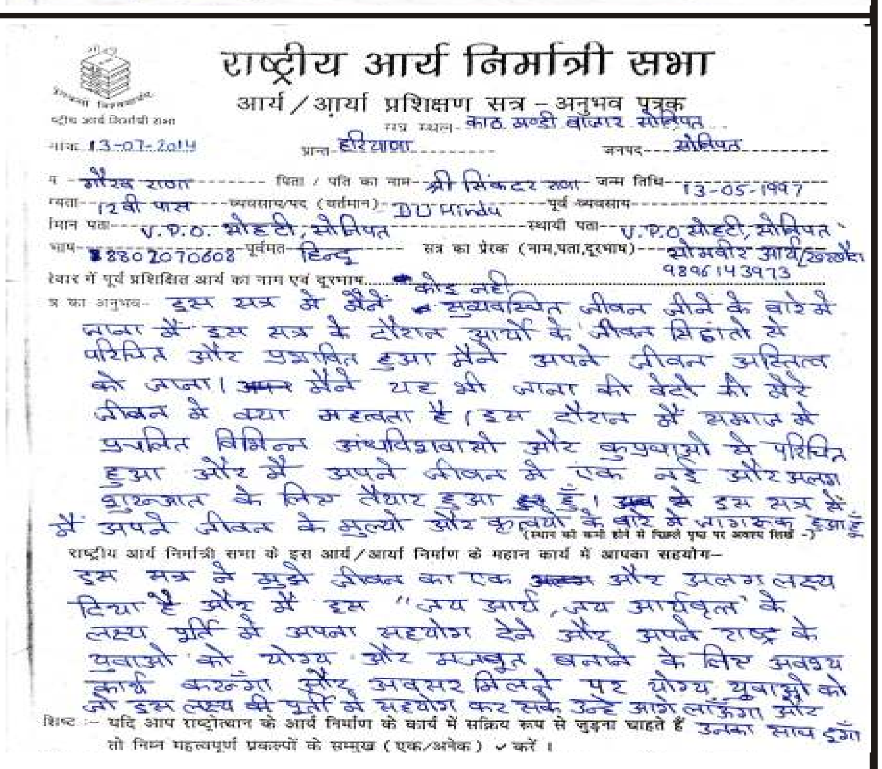
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

आर्य समाज एक सत्य स्पष्ट व उच्चतम कोटि जिसके बराबर कोई दूसरा संगठन हो ही नहीं सकता, इसमें सत्य तथा असत्य का बोध करवाया जाता है। राष्ट्रीय भावना जाग्रत की जाती है। जो मानव प्राय भटक चुके हैं उनको अपना सत्यता का रास्ता दिखाया जाता है और हमारी विरासत ईश्वर कृत वेद है, जो अपने आप में सम्पूर्ण मानव के लिए अति आवश्यक है उसका ज्ञान करवाया जाता है। यह हर मानव मात्र के लिए जरूरी है। और राष्ट्र निर्माण में यह राम बाण सिद्ध होगा, अंत में इसके बारे में जितना लिखूं कम है।

मैं इसका प्रचार जन जन तक उम्र प्रयन्त करूँगा।

विजय, आयु-27 वर्ष, योग्यता-12वीं
निवासी-ग्राम बहबल पुर, जीन्द, हरियाणा

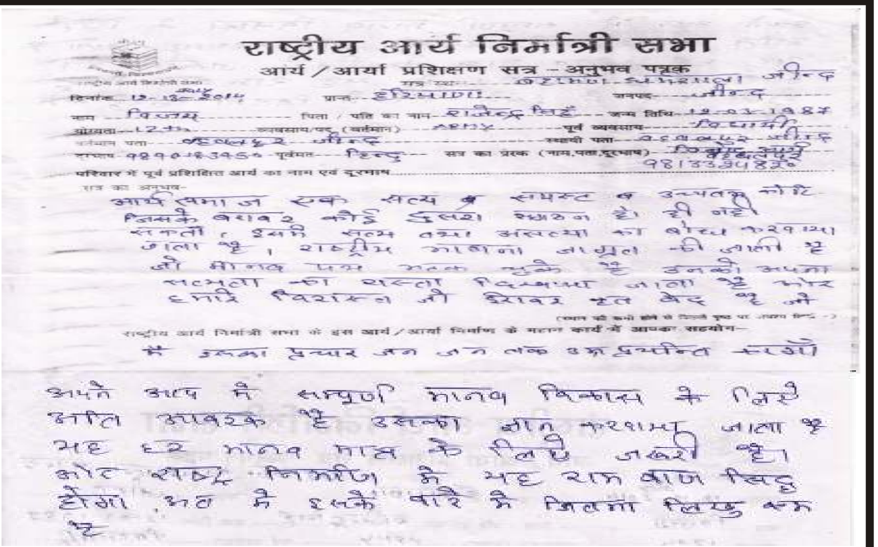
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

1. हिन्दू नाम से देवी देवताओं का बहुत भारी बोझ कम हुआ है। 2. देश की आंतरिक एवं बाह्य सुरक्षा का एक बहुत बड़ा जिम्मा महसूस हुआ है व मैंने प्रण लिया है कि देश के खासकर युवाओं को यह अहसास कराया जाए कि वे ज्यादा से ज्यादा संख्या में और बिना किसी समय को गवाए शीघ्रातिशीघ्र आर्य बनें व अपने देश का गुम हुआ नाम आर्यावर्त फिर स्थापित करें। 3. आर्य सभ्यता को तहस-नहस करने वालों को इस देश में हम नहीं रहने देंगे, यह भी मैं प्रतिज्ञा करता हूँ, यह भी शिक्षा मुझे मिली है।

मैं पूर्ण विश्वास दिलाता हूँ कि अपनी पूरी निष्ठा से इसका निर्वाह करूँगा। पूर्ण कोशिश यह रहेगी कि ज्यादा से ज्यादा युवाओं और वरिष्ठों को आर्य बनाने में सहायता करेंगे।

रोशन लाल महाला आयु-56 वर्ष, योग्यता-एम.टेक.
पद-कार्यकारी अभियन्ता, निवासी-अशोक विहार, दिल्ली

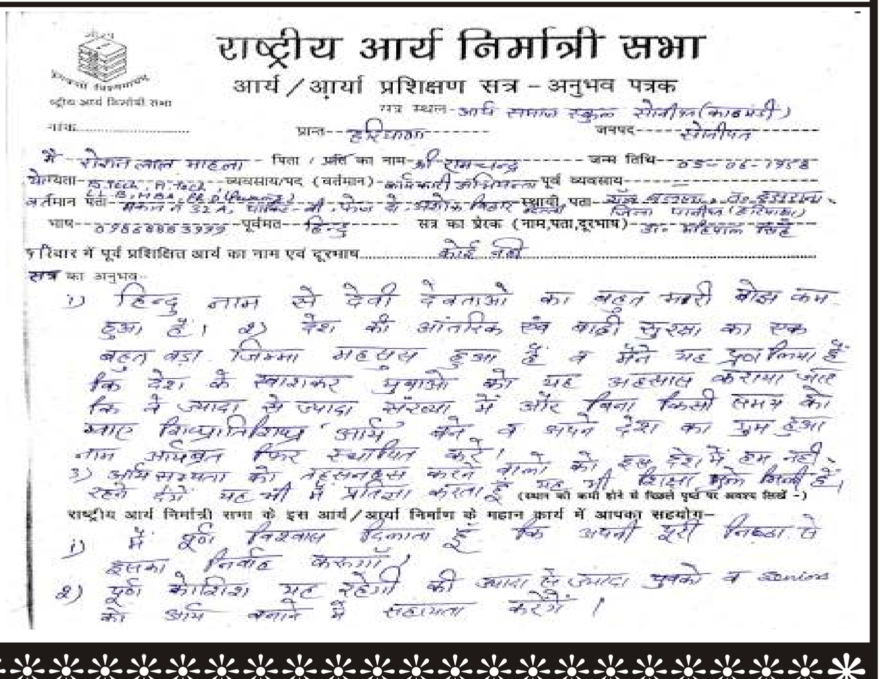
राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा
आर्य/आर्या प्रशिक्षण सत्र - अनुभव पत्रक

आर.एन.आई-संख्या : DELHIN/2007/23260
पोस्टल रजि. संख्या : DL (N) 06/213/14-16

आर्य निर्माण   राष्ट्र निर्माण

आर्य प्रशिक्षण सत्र (21-22 जून) पिरामिढ अकेडमी बवाना, दिल्ली में आचार्य डॉ विरेन्द्र आर्यव्रत

आर्य प्रशिक्षण सत्र (28-29 जून) आर्यसमाज नजफगढ़, दिल्ली में आचार्य धार्मपाल

आर्य प्रशिक्षण सत्र (26-27 जुलाई) कैलाश मठ, वाराणासी, आचार्य डॉ विरेन्द्र आर्यव्रत

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् पत्रिका की सदस्यता हेतु 100 रुपए द्विवार्षिक शुल्क मनीआर्डर से प्रांतीय कार्यालय के पते पर भेजें, स्थानीय राष्ट्रीय आर्य निर्मात्री सभा के सदस्यों के पास भी शुल्क जमा कर रसीद ले सकते हैं। पूरा पता अवश्य लिखें, न पहुंचने पर दूरभाष से कार्यालय में सूचना दें। जिन सदस्यों की सदस्यता एक वर्ष से अधिक पुरानी है वे अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करवा लेवें।

स्वामी व प्रकाशक आचार्य परमदेव मीमांसक एवं सम्पादक आचार्य हनुमत् प्रसाद द्वारा सांगोपांगवेद विद्यापीठ, आर्ष गुरुकुल, टटेसर-जौन्ती, दिल्ली-81 से प्रकाशित एवं सुदर्शन प्रैस, दिल्ली-87 से मुद्रित।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम् - समाचार पत्र मे छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक का पूर्णतया सहमत होना आवश्यक नहीं है। क्योंकि अनवधानतावश त्रुटि एवं मतभिन्न होना सम्भव है। सभी न्यायिक विवाद दिल्ली में निपटाये जाएंगे।